भाषा ऋजुपाठ ।

पहिला भाग ।

जिसे काशी के पण्डित अम्बिकादत्त व्यास साहित्याचार्य्य ने
पाठशाला के छात्रों के हितार्थ
प्रकाशित किया ।

बनारस ।

"व्यास" यन्त्रालय में पण्डित गणपति त्रिपाठी ने
मुद्रित किया ।

सं॰ १९४१

तीसरीबार १०००) (दाम ।/)

भाषा ऋजुपाठ।

अर्थात्

सरल पाठ।

प्रथम परिच्छेद।

सिंह और खरहों की कहानी।

किसी वन में भासुरक नाम सिंह रहता था। वह प्रति दिन मृग और खरहे आदि को मारा करता॥

एक समय उस वन के रहने वाले शूकर भैंसे और खरहे आदि मिल कर, उसके पास जाय बोले कि हे स्वामी! इन सब पशुओं के मारने से क्या लाभ है? आपकी तृप्ति तो एक ही पशु से हो जाती है। सो हम लोगों से आप वचन लीजिये, आज के दिन से नित्य एक जन्तु आपके भोजन के लिये आया करेगा ऐसा करने से आपकी जीविका निर्वाह बिना परिश्रम होगी और हम लोगों का सर्वनाश न होगा। सो आप इस राजधर्म को कीजिये॥

तब उन सबों की बात सुन भासुरक बोला, हां हां तुम लोगों ने ठीक कहा। परन्तु यदि नित्य एक पशु न आवेगा तो फिर अवश्य सभी को खा जाऊंगा। तब वे वैसी ही प्रतिज्ञा कर निश्चिन्त हो उस वन में निर्भय घूमने लगे। और क्रम २ से एक एक पशु भी नित्य जाने लगा। चाहे बुड्ढा हो चाहे वैरागी चाहे रोगी हो वा पुत्र और स्त्री के मरने से भयातुर हो परन्तु

स्वामी भासुरक सिंह के पास उनके भोजन
र उन के पास जाते हैं ॥
कि यह वन हमारा है। हमारे संग प्रतिज्ञा
को वरतना चाहिये । वह भासुरक तो चोर
न का राजा है तो इन पांचों खरहों को य
ताय शीघ्र चा। जो हम दोनों में से पराक्र-
होगा वही सब जन्तुओं को खाया करेगा।
से आपके पास आया हूं। यही समय बी-
सो अब आप जो भला जानिये सो कीजिये ॥
सुरक बोला हे मित्र। यदि ऐसा है तो शीघ्र
चोर सिंह कहां है, जो मैं पशुओं का क्रोध
र शान्त होऊं । यह बोला आइये स्वामी
आगे २ चला ॥
के पास पहुंच कर भासुरक से बोला हे
ल कौन सह सकता है ? आप को दूर ही से
अपने किले में घुस गया, आइये मैं दिखाऊं॥
क बोला हे मित्र वह किला मुझे शीघ्र दि-
न्तर खरहे ने कुआं दिखा दिया। उस मूर्ख
अपनी परछांहीं देख उसमें दूसरा सिंह जान
ब उस के प्रतिध्वनि से दूना शब्द कूंये में से
उसने उस गर्जना को सुन अपने तईं कूंये में
अर्थात् कूंये में कूद पड़ा और मर गया] तब
हो कर वन में रहने लगे ॥

भाषा ऋजुपाठ ।

अर्थात्

सरल पाठ ।

प्रथम परिच्छेद ।

सिंह और खरहों की कहानी ।

किसी वन में भासुरक नाम सिंह रहता था । वह प्रति दिन मृग और खरहे आदि को मारा करता ॥

एक समय उस वन के रहने वाले शूकर भैंसे और खरहे आदि मिल कर, उसके पास जाय बोले कि हे स्वामी ! इन सब पशुओं के मारने से क्या लाभ है ? आपकी तृप्ति तो एक ही पशु से हो जाती है । सो हम लोगों से आप वचन लीजिये, आज के दिन से नित्य एक जन्तु आपके भोजन के लिये आया करेगा ऐसा करने से आपकी जीविका निर्वाह बिना परिश्रम होगी और हम लोगों का सर्वनाश न होगा । सो आप इस राजधर्म को कीजिये ॥

तब उन सबों की बात सुन भासुरक बोला, हां हां तुम लोगों ने ठीक कहा । परन्तु यदि नित्य एक पशु न आवेगा तो फिर मैं अवश्य सभी को खा जाऊंगा । तब वे वैसी ही प्रतिज्ञा कर निश्चिन्त हो उस बन में निर्भय घूमने लगे । और क्रम २ से एक एक पशु भी नित्य आने लगा । चाहे बुड्ढा हो चाहे वैरागी चाहे रोगी हो वा पुत्र और स्त्री के मरने से भयातुर हो परन्तु

इस समय सब जलचरों को उन के कुटुम्बी बहुत जल वाले स्थानों में ले जा रहे हैं। मगर और † सुइंस इत्यादि आपही चले जाते हैं परन्तु इस तालाव के जलवासियों से कहा॥

तब उन सब मछली कछुवे इत्यादि ने भय से व्याकुल हो आय कर उस बकुले से पूछा कि मामा। कोई उपाय ऐसा भी है जो हम लोगों की रक्षा हो ?। बकुला बोला कि इस तालाव से थोड़ी दूर पर बहुत जल वाला सरोवर है जो चौबीस वर्ष मेघ के न बरसने पर भी नहीं सूखता सो यदि कोई मेरे पीठ पर चढ़े तो मैं उसे वहां ले जाऊं॥

तब वे सब जलवासी विश्वास कर [उस बकुले को] पिता मामा और भाई पुकार " हम पहिले हम पहले " बोलते हुये चारो ओर से आ खड़े हुये। वह दुष्ट भी उन को क्रम से पीठ पर चढ़ाय उस तलाव से थोड़े ही दूर एक बड़े चट्टान पर पहुंच उस पर पटक २ उन्हें अपनी इच्छानुसार खाने लगा। इस प्रकार वह झूठ ही मूठ नित्य जलचारियों के मन को प्रसन्न कर अपनी जीविका निर्वाह करता था। तब एक दिन केंकड़े ने उससे कहा कि मामा हमारे संग तुम्हारी पहिले पहिल स्नेह की बात चीत हुई थी। हमें छोड़ कर औरों को क्यों ले जाते हो। सो आज हमारे प्राण बचाइये। यह सुन कर वह दुष्ट सोचने लगा कि मैं मछलियों के मास से तृप्त हो गया हूं। सो आज इस केंकड़े को खाऊंगा। तब वह बहुत अच्छा कहके उसे पीठ पर रख उस शिला की ओर चला कि जहां वह उन सभों को मारता था॥

† जलहस्ति—जल का हाथी।

उन में से एक उस के भोजन के लिये दो पहर के समय पहुंच जाता था ॥

इसी प्रकार एक दिन एक खरहे की पारी आई और उसे बलात्कार सब पशुओं ने भेजा। वह भी धीरे धीरे चलते चलते समय विताय व्याकुल हो सिंह के मारने का उपाय सोचता हुआ संध्या के समय जा पहुंचा। सिंह भी समय वीतने के कारण भूख से पीड़ित हो क्रोध से ओठों के किनारों को चाटता हुआ सोचने लगा कि अच्छा कल सवेरे ही इस सारे बन को पशु रहित कर दूंगा ॥

वह ऐसे सोचरहा था कि खरहा धीरे २ जा कर प्रणाम कर उस के आगे खड़ा होगया। तब सिंह उस देर कर के आये छोटे से खरहे को देख क्रोध से लाल हो धमका कर कहने लगा कि "क्योंरे नीच खरहे एक तो तू छोटा सा है और दूसरे समय विताय कर आया तो इस अपराध से तुझे मार प्रातः काल सभी जन्तुओं के प्राण लेऊंगा" ॥

तब खरहा प्रणाम कर धीरे से बोला कि स्वामी इस में मेरा कुछ भी अपराध नहीं है और न दूसरे जन्तुओं का, कारण सुनिये। सिंह ने कहा कि "अच्छा शीघ्र कह कि जब लौं मैं तुझे अपने दांतों में न धर लूं" ॥

खरहा बोला कि स्वामी सब जन्तुओं ने आज मेरी पारी जान कर मुझे भेजा। परन्तु मुझे बहुत छोटा जान कर उन्हों ने पांच खरहे और भी मेरे संग भेजे। सो जब मैं आता था मार्ग में कोई दूसरा बड़ा भारी सिंह अपने मांद से निकल कर बोला कि अरे तुम सब कहां जाते हो। मैंने कहा कि

सिंह और सियारों की कहानी ।

किसी वन में चण्डरव नाम सियार रहता था । वह एक मय भूखा हो कर नगर में पैठा । तब नगर के रहने वाले ते उसे देख कर चोखे २ दांतों से खाने को [दौड़े] । वह भी पने प्राण के भय से भागता हुआ पास ही के एक धोबी के र में घुस गया । वहां एक नील से भरा हुआ बड़ा बरतन प्र-तुत था वह उस में गिर पड़ा, और जब उस में से निकला तो नीले रंग का हो गया । तब वे सब कुत्ते उसे शृगाल न जान र अपने २ राह चल दिये । चण्डरव भी समय पा जंगल की ओर चला ॥

तब उस अपूर्व जन्तु को देख उस बन के रहने वाले सब सिंह बाघ और छोटे मोटे जन्तु भय से व्याकुलचित्त हो इधर उधर भागने लगे और बोले कि अहो यह तो कोई अपूर्व जन्तु कहीं से आगया है । हम लोग नहीं जानते कि इसकी चेष्टा और इसका बल कैसा है सो इस दूर चलें ॥

चण्डरव भी उन सभों को भय से घबड़ाए हुए जान यह बोला कि हे हिंसक जन्तुओ क्यों तुम सब मुझे देख कर डर से भागे जाते हो ? मत डरो मत डरो आज मुझे आप ही ब्रह्मा जी ने बुला कर यह कहा कि हिंसक जन्तुओं में कोई राजा नहीं है । सो आज मैं तुझे हिंसक जन्तुओं का राजा बनाता हूं । इस कारण पृथ्वी पर जाकर तू उन सभों को पाल । सो मैं यहां आया हूं । मैं कुकुद्रुम नामक तीनों लोकों के हिंसकों का राजा हुआ ॥

यह सुन कर वे सिंहादि हिंसक जन्तु बोले कि हे स्वामी

हमलोग इस वन के स्वामी भासुरक सिंह के पास उनके भोजन के लिये प्रतिज्ञानुसार उन के पास जाते हैं॥

तब वह बोला कि यह वन हमारा है। हमारे संग प्रतिज्ञा नुसार सब पशुओं को वरतना चाहिये। वह भासुरक तो चोर है। यदि यह इस बन का राजा है तो इन पांचों खरहों को य हां रख कर उसे बुलाय शीघ्र आ। जो हम दोनों में से पराक्रम के बल से राजा होगा वही सब जन्तुओं को खाया करेगा। सो मैं उसके कहने से आपके पास आया हूं। यही समय बीतने का कारण है। सो अब आप जो भला जानिये सो कीजिये॥

इतना सुन भासुरक बोला हे मित्र! यदि ऐसा है तो शीघ्र मुझे दिखाओ वह चोर सिंह कहां है, जो मैं पशुओं का क्रोध उस पर निकाल कर शान्त होऊं। वह बोला आइये स्वामी आइये। इतना कह आगे २ चला॥

तब किसी कूंये के पास पहुंच कर भासुरक से बोला हे स्वामी! आपका तेज कौन सह सकता है? आप को दूर ही से देख कर वह चोर अपने क़िले में घुस गया, आइये मैं दिखाऊं॥

यह सुन भासुरक बोला हे मित्र वह क़िला मुझे शीघ्र दिखाओ। इस के अनन्तर खरहे ने कुआं दिखा दिया। उस मूर्ख सिंह ने भी कूंये में अपनी परछांहीं देख उसमें दूसरा सिंह जान कर शब्द किया। तब उस के प्रतिध्वनि से दूना शब्द कूंये में से निकला। तब तो उसने उस गर्जना को सुन अपने तईं कूंये में डाल प्राण त्यागे [अर्थात् कूंये में कूद पड़ा और मर गया] तब से सब जन्तु निर्भय हो कर बन में रहने लगे॥

ों ने इधर उधर घूमते २ एक भटका हुआ क्रथनक नामक
ऊंट देखा। सिंह बोला अहो ! यह बड़ा अद्भुत जन्तु है ।
खो तो यह जंगली है वा गांव का रहने वाला ? यह सुन
कौवा बोला कि स्वामी यह गाव का रहने वाला ऊंट नामक
न्तु है और आपके खाने के योग्य है सो इसे मार डालिये ।
सिंह बोला कि मैं घर पर आये हुए को नहीं मारता सो
से अभय दान देकर मेरे पास ले आओ जो उसके आने का
कारण पूछूं ।

तब सब उसे अभय दान देकर मदोत्कट के पास ले आये ।
वह प्रणाम कर के बैठा और अपना सब हाल कह गया । सिं-
ह बोला कि हे क्रथनक ! अब तुम गांव में जा कर पुनः बोझ
ढोने का कष्ट मत सहो । इसी बन में नवीन तृणों को खा के
हमारे संग रहो । वह भी अच्छा कह कर उन के बीच में घूम
ते फिरते और निर्भय हो सुख से रहने लगा ।

तब एक समय मदोत्कट का किसी जङ्गली हाथी से युद्ध
हुआ । जिस में उसे हाथी के दांत के मार से बड़ी चोट लगी ।
प्राण तो उस के किसी प्रकार बच गये परन्तु शरीर असमर्थता
से एक पग भी न चल सकता था । वे सब कौवे इत्यादि भी भूखे
हो कर बड़ा दुःख पाने लगे । तब उन से सिंह बोला कि अहो
कहीं से कोई जन्तु ढूंढ़ो क्योंकि मैं यद्यपि इस दशा में हूं,
(तौ भी क्या हुआ) उसे मार कर तुम सब को भोजन दूं ॥

इस के अनन्तर उन चारों ने घूमना प्रारम्भ किया परन्तु
कोई भी जन्तु न देखा । तब तो कौवा और शृगाल दोनों आ-
पस में "सलाह" करने लगे । शृगाल बोला सुन भाई कौवे ! अ-

बकुले और केंकड़े की कहानी ।

किसी [एक] बन में एक बहुत बड़ा तालाव था, वहां एक बकुला रहता था । वह बुड्ढा होने के कारण मछलियों को मार न सकता था । किसी समय वह भूख से शिथिल हो उस तालाव के किनारे बैठ, अपने आंसुओं की धारा से पृथ्वी को सींचता था और रोता था ॥

तब कोई केंकड़ा अनेक जल वासियों के संग उस के पास आय और उस के दुख से दुखित हो आदर के सहित बोला कि मामा ! आज तुम खाने का उपाय क्यों नहीं करते और क्यों पड़े रोते हो ? वह बोला पुत्र तुम ठीक समझे * देखो ! मैं मछली खाने वाला हूं सो अब मैंने वैराग्य से अपने प्राण त्यागने के लिये आहारादि सब छोड़दिया है सो इसी कारण मैं समीप आये हुये मछलियों को भी नहीं खाता, केंकड़ा यह सुन कर बोला मामा तुम्हारे वैराग्य का क्या कारण है ? । वह बोला कि पुत्र ! मैं यही तलाव के समीप ही उत्पन्न हुआ और यहीं पर बुड्ढा हो गया । मैंने यह सुना है कि बारह बरस की अनावृष्टि होगी । (अर्थात् बारह बरस लों पानी न बरसेगा]

केंकड़ा बोला कि यह आपने किससे सुना ? । बकुले ने कहा कि ज्योतिषी से । यह तालाव थोड़े जल वाला है शीघ्र ही सूख जायगा जिनके संग मैं बुड्ढा हुआ और सदा खेलता रहा वे सब इस तालाव के सूखने पर पानी न होने से नष्ट हो जायगे । और मैं उन का नाश नहीं देख सकता । इसी दुख से मैंने यह व्रत लिया है ॥

---

* उपलक्षितं—देखा ।

े प्राण होंगे ॥ तो हम लोगों के इन प्राणही से क्या लाभ है
ो वे स्वामी के लिये न दिये जांय। यदि आपको कुछ भी कष्ट
ो तो हम सबों को अग्नि में प्रवेश करना उचित है ॥

यह सुन सिंह बोला कि यदि ऐसा है तो जो जी में आवे
ो करो। यह सुन शृगाल झटपट आकर इन सबों से बोला
कि अरे स्वामी की अन्तिम अवस्था आ गई है। नाक में प्राण
आ रहे हैं सो घूमने फिरने से क्या लाभ है? उनके बिना कौन
हमारी इस वन में रक्षा करेगा। सो चल कर भूख से परलोक
जानेवाले अपने स्वामी को अपना२ शरीर दो। सो स्वामी की
प्रसन्नता से अपने२ ऋण से उतरें। तब वे सब आकर नेत्रों में
आंसू भर मदोत्कट को प्रणाम कर बैठे। उनको देख मदोत्कट
बोला कहो कोई जन्तु पाया या देखा कि नहीं ?

तब उन में से कौआ बोला स्वामी तब से हम लोग स
स्थान में घूमे परन्तु कहीं कोई जन्तु न पाया और न देखा सं
आज मुझे खाकर स्वामी अपने प्राण बचावें जो आपका जीव
हो और मुझे भी स्वर्ग मिले ॥

यह सुन शृगाल बोला अहो तुम्हारा देह छोटा है तुम्हा
खाने से हमारे स्वामी का पेट न भरेगा। दोष भी बड़ा होग
[क्योंकि कौवे का मांस खाना निषिद्ध है]. सो तुमने स्वामी
भक्ति दिखलायी और अपने प्रभु के अन्न के ऋण से उतरे औ
दोनों लोक में धन्य कहलाये। सो आगे से हटो तो मैं भी स्वा
से कुछ कहूं। इसके हटने पर शृगाल आदर के साथ प्रणाम क
बोला, "स्वामी आज मेरे शरीर से अपनी प्राण रक्षा कर मु
दोनों लोक दीजिये" ॥

इस समय सब जलचरों को उन के कुटुम्बी बहुत जल वाले स्थानों में ले जा रहे हैं। मगर और † सूंस इत्यादि आपही चले जाते हैं परन्तु इस तालाब के जलवासियों से कहा॥

तब उन सब मछली कछुवे इत्यादि ने भय से व्याकुल हो जाय कर उस बकुले से पूछा कि मामा। कोई उपाय ऐसा भी है जो हम लोगों की रक्षा हो?। बकुला बोला कि इस तालाब से थोड़ी दूर पर बहुत जल वाला सरोवर है जो चौबीस वर्ष मेघ के न बरसने पर भी नहीं सुखता सो यदि कोई मेरे पीठ पर चढ़े तो मैं उसे वहां ले जाऊं॥

तब वे सब जलवासी विश्वास कर [उस बकुले को] पिता मामा और भाई पुकार "हम पहिले हम पहले" बोलते हुये चारो ओर से आ खड़े हुये। वह दुष्ट भी उन को क्रम से पीठ पर चढ़ाय उस तलाव से थोड़े ही दूर एक बड़े चट्टान पर पहुंच उस पर पटक २ उन्हें अपनी इच्छानुसार खाने लगा। इस प्रकार वह झूठ ही मूठ नित्य जलचारियों के मन को प्रसन्न कर अपनी जीविका निर्वाह करता था। तब एक दिन केंकड़े ने उससे कहा कि मामा हमारे संग तुम्हारी पहिले पहिल स्नेह की बात चीत हुई थी। हमें छोड़ कर औरों को क्यों ले जाते हो। सो आज हमारे प्राण बचाइये। यह सुन कर वह दुष्ट सोचने लगा कि मैं मछलियों के मांस से तृप्त हो गया हूं। सो आज इस केंकड़े को खाऊंगा। तब वह बहुत अच्छा कहके उसे पीठ पर रख उस शिला की ओर चला कि जहां वह उन सभों को मारता था॥

† जलहू

त्य नामक तीन मछलियां रहती थीं। एक समय मछुवोंने जाते
वे उस तलाव को देख कर कहा कि अहो इस तलाव में बहुत
छलियां हैं औ इसमें कभी हमी न ढूंढ़ा। आज तो भोजन हो
का औ सांझ भी आन पहुंची सो कल सबेरेही यहां अवश्य
ाना चाहिये॥

तब उनके इस वज्रपात की नांई वचन को सुनकर अनागत-
विधाता ने सब मछलियों को बुलाकर यह कहा कि अहो कुछ
ना तुम लोगों ने जो मछुवों ने कहा? सो बस रातही रात
सरे तलाव में चल दो। मेरे मन में यह आता है कि ये मछुवे
ल प्रभात समय यहां आकर अवश्यही मछलियों का नाश
रेंगे। सो अब यहां क्षण भर भी ठहरना उचित नहीं है।
यह सुनकर प्रत्युत्पन्नमति बोला हां तुमने सत्य कहा। मैं भी
यही चाहता हूं सो दूसरे स्थान को चलो॥

इसके अनन्तर यह सुन यद्भविष्य खिलखिला के हंसकर
बोला अहो तुम लोगों ने ठीक विचार नहीं किया॥ क्या उनके
कहनेही से यह बाप दादों का तलाव छोड़ देना उचित है यदि
आयुष्य बीत गई है तो दूसरे स्थान में गये हुवों की भी मौत
होगी सो भाई, मैं तो न जाऊंगा। तुम दोनों को जो अच्छा लगे
सो करो।

ऐसा उसका विचार जानकर अनागतविधाता और प्रत्यु
त्पन्नमति दोनों अपने२ कुटुम्बी जनों के साथ वहां से निकले
और प्रातःकाल उन मछुवों ने जाल से उस तलाव को हिलोड़
यद्भविष्य समेत उस तलाव को बे मछली का कर डाला॥

कैंकड़े ने दूर ही से पट्टान के पास हड्डियों का ढेर
और मछलियों के हाड़ जान उस से पूछा कि मामा वह तल
कितनी दूर है ?। आप मेरे भार से वहुत थक गये हैं वह
यह समझ कर, कि यह जल का रहने वाला है पृथ्वी पर
न होगा, हंस कर बोला कि अरे कैंकड़े ! दूसरा तलाव कहां
आया ? यह मे जीविका निर्वाह का उपाय है ॥

सो अब अपने इष्ट देव का स्मरण कर। तुझे भी इसी चट्टा
न पर पटक कर खाता हूं जब ऐसा उसने कहा तब तो कैं
ने अपने डङ्क की सण्डसी से उस बकुले के कमलदंड के ना
धवल और कोमल गले को काट लिया। बकुला भी स्वर्ग
सिधारा ॥

तव कैंकड़ा उस बकुले के गले को लेकर धीरे २ उस तल
पर पहुंचा। तव सब जलवासियों ने उस से पूछा कि क्यों कैंक
ड़े तू क्यों लौट आया ?। क्या कोई अमंगल हुआ। वह तुम्हा
रा मामा नहीं आया, उसने देर क्यों लगाया ? हम सब
उत्सुक हो उसकी वाट देख रहे हैं ॥

जब ऐसा उन सबों ने कहा तब तो कैंकड़ा हंस कर बो
कि वह झूठा वकुला उन मूर्ख जल वासियों को ठग कर य
से समीप ही एक चट्टान पर पटक कर खागया। मैं उस विश्व
सघाती का अभिप्राय जान कर यह उस का गला ले आया
सो अब घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं, अब सब जलवा
यों का कल्याण होगा ॥

बड़े कुटुम्बवाले धन के न होने से कष्ट पाते हैं ॥ सो यहां चल कुछ थोड़ा सा धन हम दोनों अपने ले आवें । वह बोला मित्र ऐसाही करो ॥

अब वे दोनों उस स्थान को खोदने लगे तब उन्हों ने खाली बरतन देखा । इतने में पापबुद्धि अपने सिर को पीट कर बोला हे धर्म्मबुद्धि। तुम्हीं इस धन को ले गए, और कोई नहीं औ फिर भी गड़हा भर दिया । इस कारण मुझे उसका आधा दे दो । नहीं तो मैं कचहरी में जाकर कहूंगा । उसने कहा अरे दुष्ट ऐसा मत कह । मैं धर्म्मबुद्धि हूं ऐसा चोर का काम नहीं करता । इस प्रकार से दोनों लड़ते हुए धर्म्माधिकारी के पास जाकर और एक दूसरे को दोष लगाते हुवे बोले ॥

इसके अनन्तर जब राजपुरुषों ने उन से शपथ * करने को कहा तब तो पापबुद्धि बोला कि अही यह न्याव तो ठीक नहीं देख पड़ता ॥

इस विषय में हम लोगों का साक्षी (गवाह) बनदेवता है । वही दोनों में से एक को चोर या साव कर देगा तब वे सब बोले हां हां तुमने बहुत अच्छा कहा । हम लोगों को भी इस विषय (मुकद्दमे) में बड़ा आश्चर्य है । कल प्रातःकाल तुम दोनों को हम लोगों के संग उस बन में चलना चाहिये ॥

इतने में पापबुद्धि अपने घर जाकर अपने पिता से कहने लगा कि हे पिता। मैंने धर्म्मबुद्धि का बहुत धन चुरालिया है, वह तुम्हारे कहने से पच जायगा नहीं तो हम लोगों का प्राण इसी के साथ जायगा । वह बोला पुत्र! शीघ्र कहो जो मैं करके

सिंह और सियारों की कहानी ।

किसी वन में चण्डरव नाम सियार रहता था । वह एक समय भूखा हो कर नगर में पैठा । तब नगर के रहने वाले कुत्ते उसे देख कर चोखे २ दांतों से खाने को [दौड़े] । वह भी अपने प्राण के भय से भागता हुआ पास ही के एक धोबी के घर में घुस गया । वहां एक नील से भरा हुआ बड़ा बरतन प्रस्तुत था वह उस में गिर पड़ा, और जब उस में से निकला तो नीले रंग का हो गया । तब वे सब कुत्ते उसे शृगाल न जान कर अपने २ राह चल दिये । चण्डरव भी समय पा जंगल की ओर चला ॥

तब उस अपूर्व जन्तु को देख उस बन के रहने वाले सब सिंह बाघ और छोटे मोटे जन्तु भय से व्याकुलचित्त हो इधर उधर भागने लगे और बोले कि अहो यह तो कोई अपूर्व जन्तु कहां से आगया है। हम लोग नहीं जानते कि इसकी चेष्टा और इसका बल कैसा है सो इस दूर चलें ॥

चण्डरव भी उन सभों को भय से घबड़ाए हुए जान यह बोला कि हे हिंसक जन्तुओ क्यों तुम सब मुझे देख कर डर से भागे जाते हो । मत डरो मत डरो आज मुझे आप ही ब्रह्मा जी ने बुला कर यह कहा कि हिंसक जन्तुओं में कोई राजा नहीं है। सो आज मैं तुझे सिंहक जन्तुओं का राजा बनाता हूं। इस कारण पृथ्वी पर जाकर तू उन सभों को पाल । सो मैं यहां आया हूं। मैं कुकुद्रुम नामक तीनों लोकों के हिंसकों का राजा हुआ ॥

यह सुन कर वे सिंहादि हिंसक जन्तु बोले कि हे स्वामी

॥ खरहों और हाथियों की कहानी ॥

किसी बन में चतुर्दन्त नामक एक बड़ा हाथी झुंड भर का राजा रहता था। एक समय बहुत दिनों पानी न बरसा, कि जिस्से ताल तलाव गड़हे पोखरी इत्यादि सब के सब सूख गये। तब सब हाथी उस गजराज से कहने लगे कि हे स्वामी। यहं हाथी प्यास से व्याकुल हैं और कितने ही मर भी गये. सो कहीं जल का स्थान ढूंढ़ना चाहिये कि जिस में जल पीने से सब की घबराहट मिटे। तब उसने आठों दिशा में जल ढूंढने के लिये दौड़ने वाले जानवरों को भेजा ॥

तब उन्हों ने कि जो पूर्व दिशा की ओर गये थे हंस और कारण्डव आदि जल के पक्षियों से भूषित और फल के बोझ से झुके हुये बन के वृक्षों से शोभित एक चन्द्रसर नामक बड़ा भारी तालाव देखा। उसे देख प्रसन्न हो उन सबों ने लौट कर स्वामी को प्रणाम किया और कहा, महाराज। उजाड़ जंगल में एक बड़ा भारी तलाव है वहां चलिये ॥

जब ऐसे उन सबों ने कहा तो पांच रात चलते २ वे लोग तलाव पर पहुंचे। और अपनी इच्छा के अनुसार उस तलाव में न्हाकर सूर्यास्त के समय निकले। उस तलाव के किनारे खरहों के अनेकहां बिल थे, वे सब इधर उधर घूमते हुवे हाथियों से टूट गये। उस में कितने खरहे तो मर गये और कितनों के प्राण किसी किसी प्रकार बचे कितनों के पैर टूट गये, कितनों के शरीर छील छाल गये (और मांस लटकने लगा) और कितने ही लहू लोहान हो गये ॥

हे प्रभु क्या आज्ञा है ? ऐसा कह कर उस की चारों ओर खड़े हो गये ॥

तब उस ने सिंह को मंत्री की पदवी दी, व्याघ्र को बिछावन करने का अधिकार दिया चीते को पान लगाने वाला बनाया, हाथी को द्वारपाल किया और बन्दर को छत्र धरने का अधिकार सौंपा । जो अपने वर्ग के थे उन के साथ तो वह बात भी न करता था, सब शृगालों को गरदनियां देकर निकाल दिया ।

इस प्रकार वह राज्य करने लगा । वे सब सिंहादि, पशुओं को मार कर उस के आगे रख देते थे, वह राजधर्म के अनुसार उन सबों को भाग कर के देता था ॥

यों ही कुछ दिन बीतने पर एक समय सभा में बैठे हुये उसने कहीं दूर स्थान में चिल्लाते हुये शृगालों के समूह का शब्द सुना । उस शब्द को सुन रोमाञ्चित शरीर हो आनन्द से भर उठ के ऊंचे स्वर से चिल्लाने लगा ॥

तब वे सब सिंहादि उस का शब्द सुन और शृगाल जान लज्जा से नीचे मुख कर एक क्षण भर ठहर गये । और तब आपस में कहने लगे कि अहो इस नीच शृगाल ने तो हम लोगों से दास का काम कराया, मारो, मारो इसे । उस ने भी इतना सुन कर ज्यों ही भागने की इच्छा किया कि सिंहादिकों ने टुकड़े २ कर डाला ॥

सिंह और उसके दास की कहानी।

किसी बन में मदोत्कट नाम सिंह रहता था । उस के बहुत से बाघ कौवे और शृगाल इत्यादि अनुचर थे । एक समय उ-

जहाँ यह मार न सके। ऐसा विचार एक अति ऊँचे स्थान
जहाँ किसी की पहुँच न हो चढ़कर वह उस गजराज से बोला
परे दुष्ट हाथी को इस प्रकार, अपमान से और निडर होकर
यि तलाव पर आता है, जा लौट जा ॥

यह सुन हाथी आश्चर्य खाकर बोला कि तू कौन है? वह कहने
गा कि मैं विजयदत्त नामक चन्द्रमण्डल का रहने वाला खरहा
। यह भगवान चन्द्रमा ने अपना दूत तेरे पास भेजा है। तू जान
ता ही है कि ठीक २ सन्देस कहनेवाले दूत का कुछ दोष नहीं
होता। राजाओं के मुख दूत ही * होते हैं। यह सुन हाथी बोला
[हे खरहे] कहो, भगवान चन्द्रमा का सन्देस कहो कि जिसे
सुनकर झट करें ॥

वह बोला कि भगवान चन्द्रमा ने यह कहा है कि कल तुमने
झुंड के संग आते हुए बहुत से खरहों को मार डाला। तुम जानते
हो हो कि ये हमारे आश्रित हैं इसी कारण संसार में मेरा नाम
शशाङ्क प्रसिद्ध है। सो यदि अपना जीवन चाहते हो तो फिर इस
तलाव पर मत आना। अनवहुत बकवाद करने से क्या लाभ है?
यदि तुम इस काम से अपना हाथ न खींचोगे तो हम से बड़ा कष्ट
पावोगे। यही उनका संदेस है ॥

यह सुन हाथियों का राजा बहुत घड़घड़ाकर सोचकर बोला कि
मित्र सत्य ही मैंने भगवान चन्द्रमा का अपराध किया है। सो अब
मैं उन से विरोध न करूंगा। शीघ्र मुझे मार्ग दिखाओ जो मैं जा
कर भगवान चन्द्रमा को प्रसन्न करूं। खरहा बोला कि अच्छा हमारे

---

* अर्थात् राजा लोग शत्रु के पास आप कहने नहीं जाते दूतों से
सन्देसा कहला देते हैं ॥

ों ने इधर उधर घूमते २ एक भटका हुआ क्रथनक नामक ऊंट देखा। सिंह बोला अहो ! यह बड़ा अद्भुत जन्तु है । देखो तो यह जंगली है वा गांव का रहने वाला ? यह सुन कौवा बोला कि स्वामी यह गांव का रहने वाला ऊंट नामक जन्तु है और आपके खाने के योग्य है सो इसे मार डालिये।

सिंह बोला कि मैं घर पर आय हुए को नहीं मारता सो इसे अभय दान देकर मेरे पास ले आओ जो इसके आने का कारण पूछूं ।

तब सब उसे अभय दान देकर मदोत्कट के पास ले आये। वह प्रणाम कर के बैठा और अपना सब हाल कह गया। सिंह बोला कि हे क्रथनक ! अब तुम गांव में जा कर पुनः बोझ ढोने का कष्ट मत सहो। इसी बन में नवीन हर्यों को खा के हमारे संग रहो। वह भी अच्छा कह कर उन के बीच में घूमने फिरने और निर्यन्त हो सुख से रहने लगा।

तब एक समय मदोत्कट का किसी जङ्गली हाथी से युद्ध हुआ। जिस में उसे हाथी के दांत के मार से बड़ी चोट लगी प्राण तो उस के किसी प्रकार बच गये परन्तु शरीर असमर्थत से एक पग भी न चल सकता था। वे सब कौवे इत्यादि भी भूखे हो कर बड़ा दुःख पाने लगे। तब मन से सिंह बोला कि अहो कहीं से कोई जन्तु ढूंढो क्योंकि मैं यद्यपि इस दशा में हूं (तो भी क्या हुआ) उसे मार कर तुम सब को भोजन दूं॥

इस के अनन्तर उन चारों ने घूमना प्रारम्भ किया परन्तु कोई भी जन्तु न देखा। तब तो कौवा और शृगाल दोनों आपस में "सलाह" करने लगे। शृगाल बोला सुन भाई कौवे ! ब-

("तीन धूर्तों की कहानी")

किसी नगर में मित्रशर्मा नामक ब्राह्मण रहता था। वह एक समय माघ के महीने में पशु मांगने के लिये किसी दूसरे गांव में गया वहां जाकर उसने किसी यजमान से मांगा कि हे यजमान इस। आनेवाली अमावस्या को मैं यज्ञ करूंगा सो मुझे एक पशु दो। तब उसने उसे एक मोटा पशु कि जैसा शास्त्रों में कहा है दिया। वह भी उसे समर्थ और इधर उधर चलता देख कांधे पर रख शीघ्र अपने नगर की ओर चला ॥

अनन्तर उसको मार्ग में तीन धूर्त साम्हने से मिले। उन सबोंने वैसे मोटे पशु को उसके कान्धे पर चढ़ा देख परस्पर कहा कि अहो आज बड़ा पाला पड़ता है सो जैसे बने तैसे इसे ठग कर पशु को ले शीत का बचाव करना चाहिये ॥

तब उन में से एक अपना वेष "बदल" कर साम्हने आ उससे बोला अहो यह लोक विरुद्ध हंसी का काम क्यों करते हो? जो इस अपवित्र कुत्ते को कांधे पर चढ़ाये लिये जाते हो। तब वह ब्राह्मण क्रुद्ध हो कर बोला अरे क्या तू अन्धा है? जो इस पशु को (बकरे को) कुत्ता बनाता है। वह बोला कि ब्राह्मण देवता क्रोध मत कीजिये अपनी इच्छा से चले जाइये ॥

अनन्तर जब लों दूसरे मार्ग से जाताही था कि दूसरा धूर्त साम्हने से आ उससे बोला कि अहो ब्राह्मण देवता! हा! बड़े खेद की बात है यद्यपि यह कुत्ता आप का प्रिय है तो भी कांधे पर चढ़ाना उचित नहीं है। तब वह क्रोध से यह बोला कि क्या तू अन्धा भया है जो बकरे को कुत्ता कहता है? उसने कहा महाराज जी! क्रोध

हुत घूमने से क्या लाभ है। वह जो हमारे स्वामी का विश्वास पात्र क्रथनक है उसी को मार कर सब कुटुम्ब की जीविका चलावें। कौवा बोला वाह तुम ने तो सच कहा, परन्तु स्वामी ने तो उसे अभयदान दिया है। इस कारण अब वह मारने के योग्य नहीं है। शृगाल बोला कि "हे कौवे" मैं स्वामी से कह सुन के वही करूंगा कि जिस में वह उस का वध करेगा। तब लौं तुम यहीं ठहरो कि जब लौं मैं घर जा कर और स्वामी की आज्ञा लेकर आता हूं। इतना कह शृगाल झट पट सिंह के पास चला॥

तब वह सिंह के पास पहुंचकर यह बोला कि स्वामी समस्त जङ्गल हम लोग घूम आये, परन्तु कोई भी जन्तु न मिला। सो अब हम क्या करें?। इस समय तो मारे भूख के एक पग भी नहीं चल सकते। आपको भी बड़ी भूख लगी है सो यदि आपकी आज्ञा होय तो क्रथनक के मांस से आज आहार वृत्ति की जाय॥

सिंह तो इस कठोर वचन को सुनकर बोला कि धिक्कार है रे पापी तुझे !!! यदि पुनः ऐसा कहेगा तो उसी क्षण तुझे मार डालूंगा। मैं उसे अभयदान दे चुका हूं तो फिर कैसे उसे आपही मारूं। यह सुन शृगाल बोला कि स्वामी यदि अभयदान देकर आप उसका वध करें तब आपको दोष होगा परन्तु यदि वह आप के चरणों की भक्ति से आपही अपने प्राण दे दे तो इस में दोष नहीं है. सो यदि आपही वह अपना वध करावे तब तो वह मारने योग्य है नहीं तो हम्हीं लोगों में से कोई एक मारा जाय॥ आप भूखे हैं. भूख के रोकने से अन्तिम दशा

कभी एक दिन देंवकीं की मिट्टी पर दूध ले जाने की आज्ञा पुत्र को दे वह ब्राह्मण किसी गांव को गया । पुत्र भी वहां दूध ले जा रख कर घर को चला आया । दूसरे दिन वहां जाकर एक मोहर देख वह सोचने लगा कि यह देवकीं की मिट्टी अवश्यही सोने की मोहरों से भरी है तो इस सर्प को मार कर सब को एकही बेर ले लूंगा । ऐसा विचार दूसरे दिन दूध देते हुवे ब्राह्मण के पुत्र ने सांप को लाठी से सिर में मारा । उसने भी भाग्य वश से बचकर क्रोध से उस ब्राह्मण पुत्र को अपने चोखे दांतों से ऐसा डसा कि वह वहीं पर नष्ट हो गया * ॥

अब फिर ब्राह्मण देवता ने प्रातःकाल दूध ले वहां जाय ऊंचे स्वर से सांप को पुकारा । तब सांप देंवकीं की मिट्टी के भीतरही छिपा हुआ उस ब्राह्मण से बोला कि तू पुत्र का शोक छोड यहां लोभ से आया है । अब आगे हमारी तुम्हारी प्रीति उचित नहीं है जवानी के मदसे तेरे गर्वित पुत्रने मुझे मार मैंने उसे डसा । क्या मैं लकड़ी की मार भूल जाऊंगा ? और क्या तू पुत्र का शोक भूल जायगा ? इतना कह एक बहुत दाम वाला अनमोल हीरा उसे दे सांप अपने बिल में घुसगया और जाते : यह कह गया कि अब तू यहां कभी मत आइयो. ब्राह्मण भी उस हीरे को ले अपने पुत्रको बुद्धि की निन्दा करता हुआ अपने घर गया ॥

तो प्राप्त होंगी। तो हम लोगों के इन प्राणहीं से क्या लाभ है जो वे स्वामी के लिये न दिये जाय। यदि आपको कुछ भी कष्ट हो तो हम सबों को अग्नि में प्रवेश करना उचित है॥

यह सुन सिंह बोला कि यदि ऐसा है तो जो जी में आवे सो करो। यह सुन शृगाल झटपट आकर इन सबों से बोला कि अरे स्वामी की अन्तिम अवस्था आ गई है। नाक में प्राण आ रहे हैं सो घूमने फिरने से क्या लाभ है? इनके बिना कौन हमारी इस बन में रक्षा करेगा। सो अब कर भूख से परलोक जानेवाले अपने स्वामी को अपना२ शरीर दो। सो स्वामी की प्रसन्नता से अपने२ ऋण से उतरें। तब वे सब आकर नैनों में आंसू भर मदोत्कट को प्रणाम कर बैठे। उनको देख मदोत्कट बोला कहो कोई जन्तु पाया या देखा कि नहीं?

तब उन में से कौआ बोला स्वामी तब से हम लोग सब स्थान में घूमे परन्तु कहीं कोई जन्तु न पाया और न देखा सो आज मुझे खाकर स्वामी अपने प्राण बचावें जो आपका जीवन हो और मुझे भी स्वर्ग मिले॥

यह सुन शृगाल बोला अहो तुम्हारा देह छोटा है तुम्हारे खाने से हमारे स्वामी का पेट न भरेगा। दोष भी बड़ा होगा [क्योंकि कौवे का मांस खाना निषिद्ध है] सो तुमने स्वामी की भक्ति दिखलायी और अपने प्रभु के अन्न के ऋण से उतरे और दोनों लोक में धन्य कहलाये। सो आगे से हटो तो मैं भी स्वामी से कुछ कहूं। इसके हटने पर शृगाल आदर के साथ प्रणाम कर बोला, "स्वामी आज मेरे शरीर से अपनी प्राण रक्षा कर मुझे दोनों लोक दीजिये"॥

के ऊंचे चौखट पर मोने की मोठ कर यह दोहा पढ़ सुखपूर्वक आकाश में उड़ गया कि—

दोहा।

पहिले तो मूरख हमी दूजो मूढ़ बहेल।
मंत्री राजा मूढ़ मव भयो मूंढ़ सम्मेल॥

॥ "सिंह और सियार की कहानी" ॥

किसी बन में खरनखर नामक सिंह रहता था। एक समय इधर उधर घूमते २ भूख से उसका कण्ठ सूख गया और कोई पशु न मिला। तब सूर्य्यास्त के समय एक पर्वत की बड़ी कन्दरा के पास पहुंच उस में घुस कर सोचने लगा किअवश्य इस गुफा में रात को कोई न कोई जन्तु आवेगा। सो छिपकर इस में बैठूं। इतनेहीं में उस गुफ़ा का स्वामी दधि पुच्छ नामक शृगाल आया। उसने देखा कि सिंह के पांव के चिन्ह गुफा में गये हैं और फिर बाहर नहीं निकले। तब तो वह सोचने लगा कि अरे अब तो मैं मरा, निस्सन्देह इसके भीतर सिंह होगा तो अब क्या करूं कैसे जानूं॥

इतना विचार दधिपुच्छने बारही पै खड़े हो अहो गुफा। अहो गुफा!! इतना कह चुप हो फिर बोला कि अहो क्या तुझे स्मरण नहीं है कि मुझ से तुझ से प्रतिज्ञा हुई है कि जब मैं बाहर से आकर तुझे पुकारूं तो तू मुझे बुलावे। सो यदि मुझे तू नहीं पुकारती तो मैं दूसरी गुफा में चला जाता हूं।

यह सुन सिंह ने विचारा कि निस्सन्देह यह गुफा इसके आने पर सदैव पुकारती है। परन्तु आज मेरे डर से कुछ नहीं

यह सुन चीता बोला हां हां तुमने सत्य कहा परन्तु तुम भी छोटे हो और नह * होने के कारण खाने के योग्य नहीं। तुमने अपनी कुलीनता दिखलायी, सो आगे से हटो जो मैं भी अपने स्वामी को प्रसन्न करूँ। उसके हटनें पर चीता प्रणामकर बोला, स्वामी आज हमारे प्राण से अपने प्राण बचाइये, और मुझे स्वर्ग में सदैव का वास दीजिये, संसार में बड़ा यश फैलाइये और इस में कुछ सन्देह मत कीजिये॥

यह सब सुनकर क्रथनक ने सोचा कि इन सबों ने अच्छीर बातें कहीं परन्तु किसी को भी स्वामीने न मारा। सो मैं भी समयानुसार प्रार्थना करूं॥

इतना विचार वह बोला कि हां तैंने ठीक कहा परन्तु तुझे भी तो नंह हैं, तो कैसे तुझे स्वामी खांयगें। सो हट जो मैं भी कुछ स्वामी से कहूं। उसके हटने पर क्रथनक आगे खड़ा हो प्रणामकर बोला "स्वामी! ये सब तो आपके खाने के योग्य नहीं हैं सो मेरे प्राण से अपने प्राण बचाइये, और मुझे दोनों लोक मिलें"॥

जब उसने ऐसा कहा तो सिंह की आज्ञा से व्याघ्र और शृगाल दोनों ने तो उसका पेट फाड़ डाला कौवे ने आंख निकाल ली और क्रथनक ने अपने प्राण त्यागे॥

॥"तीन मछलियों की कहानी"॥

किसी तलाव में अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमति और यद्भवि

---

* जिस पशुओं का नंह आयुध होता है उनका भक्षण करना शास्त्र से निषिद्ध है॥

सी ब्राह्मण के पुत्र के अंगूठे को मैंने उसी वो ऐसा देख धोखे से न लिया। वह बिचारा उसी क्षण मर गया॥

तब उसके पिता ने दुखित हो मुझे शाप दिया कि हे दुष्ट तैंने रे निरपराधी पुत्र को डसा है सो इस शाप से तू मेंड़कों का वाहन होगा और उनको प्रसन्नता से जीविका पावेगा। सो मैं तुम गन का वाहन होकर आया हूं॥

तब उसने उन सब मेंड़कों को यह कह दिया। उन सबों नेभी सन्नचित्त होकर जलपाद नामक मेंड़कों के राजा के पास जाकर ह समाचार कहा। तब वह भी मंत्रियों के साथ तलाव से निकल और आश्चर्य मान मन्दविष सर्प के फण पर चढ़ बैठा और बचे वयासे क्रम से उसके पीठ पर चढ़े। बहुत कहने से क्या लाभ उन में से बहुतों ने स्थान न पाकर उस के पीछे २ दौड़ना प्रारम्भ किया। तब जलपाद उस के शरीर के स्पर्श का सुख पाकर बोला कि —

दोहा।

गज में रथ में तुरंग में नरयानहु में नांहि।

ऐसो सुख पातहुं नहीं यथा मन्दविष मांहि॥

मन्दविष ने भी उन को प्रसन्नता के लिये अनेक प्रकार की चालें दिखाईं॥

इसके अनन्तर दूसरे दिन मन्दविष कपट से धीरे धीरे चलने लगा। उसे देख जलपाद बोला मित्र मन्दविष! आज पहिले की नाईं अच्छी भांति क्यों नहीं चलते। मन्दविष बोला महाराज आज आहार न मिलने से मेरी चलने की सामर्थ्य नहीं है। तब यह बोला मित्र छोटे मेंड़कों को खाओ। यह सुन

य नामक तीन मछलियां रहती थीं। एक समय मछुवों* ने जाते हुये उस तलाव को देख कर कहा कि अहो इस तलाव में बहुत मछलियां हैं औ हमने कभी इसे न ढूंढ़ा। आज तो भोजन हो चुका औ सांझ भी आन पहुंची सो कल सवेरेही यहां अवश्य आना चाहिये॥

तब उनके इस बज्रपात की नांई बचन को सुनकर अनागतविधाता ने सब मछलियों को बुलाकर यह कहा कि अहो कुछ सुना तुम लोगों ने जो मछुवों ने कहा? सो अब रातही रात दूसरे तलाव में चल दो। मेरे मन में यह आता है कि ये मछुवे कल प्रभात समय यहां आकर अवश्यही मछलियों का नाश करेंगे। सो अब यहां क्षण भर भी ठहरना उचित नहीं है। यह सुनकर प्रत्युत्पन्नमति बोला हां तुमने सत्य कहा। मैं भी यही चाहता हूं सो दूसरे स्थान को चलो॥

इसके अनन्तर यह सुन यद्भविष्य खिलखिला के हंसकर बोला अहो तुम लोगों ने ठीक विचार नहीं किया। क्या उनके कहनेही से यह बाप दादों का तलाव छोड़ देना उचित है यदि आयुष्य बीत गई है तो दूसरे स्थान में गये हुवों की भी मौत होगी सो आई, मैं तो न जाऊंगा। तुम दोनों को जो अच्छा लगे सो करो।

ऐसा उसका विचार जानकर अनागतविधाता और प्रत्युत्पन्नमति दोनों अपने२ कुटुम्बी जनों के साथ वहां से निकले। और प्रातःकाल उन मछुवों ने जाल से उस तलाव को हिण्डोल यद्भविष्य समेत उस तलाव को वे मछली का कर डाला॥

---

* मछली मारनेवाले।

इतना ठान उस ने बिल के मुंह पर जाकर उसे पुकारा ।कि हे प्रियदर्शन ! यहां आओ यहां आओ । यह सुन सांप ने सोचा कि यह जो मुझे पुकार रहा है सो मेरे जात का नहीं है । क्योंकि यह सांप का शब्द नहीं है और किसी दूसरे के साथ इस संसार में मेरे से मैत्री नहीं है । सो यहीं बिल के किले में रह कर जान लेता हूं कि यह कौन है क्योंकि कहा है कि—

दोहा

जाको कुल अरु शीलहू बास न जान्यो कोय ।
तासों भाषत यों सुजन मेल न कीजो कोय ॥

ऐसा न हो कि कोई "मदारी" अथवा जड़ी बूटी वाला मुझे बुला बन्धन में डाले । अथवा कोई मनुष्य बैर से किसी बैरी के लिये मुझे बुलाता है सो वह बोला कि अहो तुम कौन हो ? उसने कहा कि मैं गङ्गदत्त नामक मेंड़कों का स्वामी हूं तुम्हारे पास मैत्री के लिये आयाहूं ॥

यह सुन सर्प बोला अहो यह अनहोनी बात है । तिनकों की अग्नि के साथ मैत्री कहां ? । गङ्गदत्त ने कहा अहो यह तो सत्य है कि तुम जन्म ही से हम लोगों के बैरी हो । परन्तु मैं अपमान सह कर तुम्हारे पास आया हूं । सांप ने कहा कि कहो किसने तुम्हारा अनादर किया है? वह बोला कि कुटुम्बियों ने । सर्प कहने लगा कि तुम्हारे रहने का स्थान कहां है ताल, कुवों, तलाव, या सरोवर में ? उस ने कहा कि पत्थर से घिरे कूए में । सांप बोला कि हमलोगों को पांव नहीं होता सो वहां मेरी पैठ नहीं हो सकती । पैठ भी गए तो स्थान नहीं है कि जहां बैठ कर तेरे कुटुम्बियों को मारूं ॥

॥ "धर्म्म बुद्धि औरपाप बुद्धि की कहानी" ॥

किसी नगर में धर्म्मबुद्धि और पापबुद्धि नामक दो मित्ररहते थे। एक समय पापबुद्धि ने विचारा कि मैं तो मूर्ख और कङ्गाल हूं सो इस धर्म्मबुद्धि को साथ ले दूसरे किसी देश में जा इसके आसरे से धन प्राप्त कर और इसे भी ठग सुखी होऊं। दूसरे दिन वह धर्म्मबुद्धि से बोला कि हे मित्र दूसरे देश को न देख कर वृद्धावस्था में लड़कों से कौन सी बात कहोगे॥

यह सुन धर्म्मबुद्धि प्रसन्न चित्त होकर अपने बड़े लोगों की आज्ञा ले किसी अच्छे दिन उसके संग दूसरे देश को चला। वहां धर्म्मबुद्धि के प्रभाव से पापबुद्धि ने भी बहुत धन पाया। तब वे दोनों अतुल धन उपार्जन * कर प्रसन्न हो बड़ी चाह से अपने घर लौटे॥

जब पापबुद्धि अपने घर के समीप पहुंचा तब धर्म्मबुद्धि से बोला कि मित्र यह उचित नहीं है कि सब का सब धन घर ले जांय क्योंकि जाति और कुटुम्ब के लोग मांगेंगे॥ सो यहीं इस घोर जङ्गल में कहीं भूमि में इसे रख के थोड़ा सा लेकर हम दोनों घर को चलें॥ जब पुनः काम पड़ेगा तो यहां आकर हम दोनों ले जायंगे॥ यह सुन धर्म्मबुद्धि बोला कि मित्र ठीक है ऐसाही करो तब वे दोनों उस द्रव्य को वहां रख अपने२ घर जाकर सुख से रहने लगे॥

एक समय पापबुद्धि आधीरात को वन में जाकर वह सब धन ले, गड्ढे को भर अपने घर चला गया। तब दूसरे दिन पापबुद्धि धर्म्मबुद्धि के पास आकर बोला कि हे मित्र हम दोनों

---

* कमाकर।

सांप बोला हे गङ्गदत्त आपने ठीक नहीं कहा मैं वहां क्यों कर जाऊं ? । मेरे बिल के गढ़ को दूसरे ने रोक दिया होगा। इस लिये यहां ही बैठे हुए मुझको अपने वर्ग का एक २ मेंड़का दिया करो। नहीं तो सभी को खाजाऊंगा। यह सुन गङ्गदत्त घबरा कर विचारने लगा ओः मैंने इसे यहां लाकर क्या किया ? जो मना करूं तो सभी को खा जाताहै। यों निश्चय कर उसे प्रति दिन एक २ मेंडका देने लगा। वह भी उसे खाकर छिप के दूसरे को भी खालेता था ॥

अनन्तर किसी दिन वह और मेड़कों को खाकर गङ्गदत्त के बेटे यमुनादत्त को खागया, उसे खाया हुआ सुन गङ्गदत्त बहुत विलाप करने लगा। तब उसकी स्त्री ने उस से कहा ॥

दोहा

रे कुलनाशक तू वृथा क्यों रोवत गहु मौन।
निज कुटुम्ब मारे गये रच्छा करिहै कौन ? ॥

फिर समय बीतने पर वह सभी मेड़कों को खाहा कर गया, एक अकेला गङ्गदत्त ही रह गया। तब प्रियदर्शन ने कहा मित्र गङ्गदत्त मैं भूखाहूं। सब मेंड़के चुकगये। इस लिये मुझे कुछ भोजन दो। वह बोला मित्र मेरे रहते इस बात पर तुम्हें कुछ चिन्ता न करना चाहिये। जो मुझे भेजो तो दूसरे कूवों के मेंडकों को भी विश्वास दे कर यहां ले आऊं। वह बोला मेरे तो तुम भाई के ठिकाने हो इस लिये अभय दान है। पर यदि ऐसा करो तो पिता के स्थान में हो। सो ऐसाही करो। वह इतना सुन चरसे में बैठ कूयें से बाहर निकला। प्रियदर्शन भी उसके आने की इच्छा से मार्ग देख रहा था ॥

जब बहुत देर हुई और गङ्गदत्त न आया तब तो प्रियदर्शन

हे कुटुम्बवाले धन के न होने से कष्ट पाते हैं ॥ सो वहां चल कर थोड़ा सा धन हम दोनों भी ले आवें ॥ वह बोला मित्र शीघ्रता करो ॥

अब वे दोनों उस स्थान को खोदने लगे तब उन्हों ने खाली बरतन देखा। इतने में पापबुद्धि अपने सिर को पीट कर बोला हे धर्म्मबुद्धि! तुम्हीं इस धन को ले गए, और कोई नहीं और फिर भी गड़हा भर दिया। इस कारण मुझे उसका आधा दे दो। नहीं तो मैं कचहरी में जाकर कहूंगा। उसने कहा अरे दुष्ट ऐसा मत कह। मैं धर्म्मबुद्धि हूं ऐसा चोर का काम नहीं करता। इस प्रकार वे दोनों लड़ते हुए धर्म्माधिकारी के पास जाकर और एक दूसरे को दोष लगाते हुवे बोले ॥

इसके अनन्तर जब राजपुरुषों ने उन से शपथ * करने को कहा तब तो पापबुद्धि बोला कि अहो यह न्याय तो ठीक नहीं देख पड़ता ॥

इस विषय में हम लोगों का साक्षी (गवाह) बनदेवता है। वही दोनों में से एक को चोर या साव कर देगा तब वे सब बोले हां हां तुमने बहुत अच्छा कहा। हम लोगों को भी इस विषय (मुकद्दमे) में बड़ा आश्चर्य है। कल प्रातःकाल तुम दोनों को हम लोगों के संग उस बन में चलना चाहिये ॥

इतने में पापबुद्धि अपने घर जाकर अपने पिता से कहने लगा कि हे पिता! मैंने धर्म्मबुद्धि का बहुत धन चुरालिया है, वह तुम्हारे कहने से पच जायगा नहीं तो हम लोगों का प्राण इसी के साथ जायगा। वह बोला पुत्र! शीघ्र कहो जो मैं करके

सिंह बोला अरे जा किसी जन्तु को खोज में हम दया भी मारूंगा। यह सुन वह सियार ढूंढ़ते २ किसी एक समीप ही के गांव में पहुंचा। वहां उसने लम्बकर्ण नामक एक गदहे को तलाव के किनारे सुन्दर दूब के अंकुर कष्ट से चरते हुए देखा। तब वह समीप जाकर बोला मामा यह मैं नमस्कार करता हूं इसे ग्रहण कीजिये। बहुत दिनों के उपरान्त दर्शन दिये। सो कहिये आप इतने दुर्बल क्यों हो गये हैं॥

लम्बकर्ण बोला कि भांजे क्या कहूं। धोबी बड़ा निठुर है कि बहुत बोझ से बड़ा कष्ट देता है, मूठी भर भी घास नहीं देता यहीं पर केवल धूल मिले हुये दूब के अंकुर खाता हूं। तो मोटाई कहां से आवे? सियार बोला कि मामा यदि ऐसा है तो एक पन्नेके नाईं हरी घासों से भरा नदी के किनारे एक बड़ा मनोहर स्थान है। वहां चलकर मेरे साथ सुख से रहो। लम्बकर्ण बोला कि हे भांजे तुमने ठीक कहा परन्तु हम लोग गांव के रहनेवाले पशु हैं औरजङ्गली जीव हम लोगों को मार डालते हैं। तो ऐसे अच्छे स्थल से क्या लाभ है सियार बोला मामा ऐसा मत कहो वह समस्त स्थान मेरे भुजारूपी पिञ्जड़े में रक्षित है किसी दूसरे की वहां पहुंच नहीं है॥

तब लम्बकर्ण सियार के संग सिंह के पास आया वह व्याकुल सिंह उस गदहे को देख घबरा उठे २ तब लौं तो गदहे ने भागना प्रारम्भ किया॥

तब उस भागते हुये गदहे पर सिंह ने पञ्जा चलाया, सो कि भाग्य हीन के उद्योग की नाईं हवा हो गया॥

तब तो सियार क्रोध कर उससे बोला कि अहो क्या ऐसी

उसे पक्का करदूं। पापबुद्धि बोला कि हे पिता उस वन में एक बड़ा शमी का वृक्ष है। उस में एक बहुत बड़ा खोंड़रा है। वहां तुम अभी जा घुसो। और जब प्रातःकाल मैं कहूं कि सच २ कहो तब तुम कहना कि धर्म्मबुद्धि चोर है॥

ऐसाही करने पर प्रातःकाल स्नान करके पापबुद्धि धोये वस्त्र धारण कर धर्म्मबुद्धि को आगे ले धर्म्माधिकारियों के साथ उस शमी वृक्ष के पास पहुंच उच्चस्वर से बोला कि हे भगवान वन के देवता हम दोनों में से जो चोर हो उसे तुम कहो। तब खोंड़रे में बैठा हुआ पापबुद्धि का बाप बोला कि अहो तुम सब सुनो धर्म्मबुद्धि ने वह सब धन चुराया है। यह सुन उन सब राजपुरुषों के नेत्र आश्चर्य से खुल गये। धर्म्मबुद्धि ने उस खोंड़रे को अग्नि के बालने योग्य वस्तु से चारोंओर से घेर उसमें आग लगा दी॥

जब वह जलने लगा तब पापबुद्धि का पिता हाय २ करके रोता हुआ उस शमी के वृक्ष में से निकला और उसका आधा शरीर जला और नेत्र फूटा हुआ था। तब उन सभों ने पूछा अरे यह क्या?। तब तो वह यह कहके मर गया कि "यह सब पापबुद्धि का किया है।" तब वे सब राजपुरुष पापबुद्धि को शमी की डार में लटका धर्म्मबुद्धि की प्रशंसा कर यह बोले अहो सत्य कहा है कि— (सोरठा)

'केवल करत उपाय हानि तासु निरखत नहीं।
दुःख परत है धाय पापबुद्धि लों तासु सिर" ॥

इस पापबुद्धि ने उपाय तो सोचा परन्तु हानि न विचारी सो उसका फल पाया। इति॥

॥ सिंहनी और सियार के बच्चे की कहानी ॥

किसी बन में एक जोड़ा सिंह रहता था। एक समय सिंहिनी ने दो पुत्र जने। सिंह प्रति दिन पशुओं को मार २ उस सिंहिनी को देता था। एक दिन उसने कुछ भी न पाया, बन में घूमते २ उसे सूर्यास्त होगया। तब उसने घर लौटते समय मार्ग में एक सियार का बच्चा पाया। उसने बच्चे को देख यत्न से उसे दांतों में रख जीता ही लाकर सिंहिनी को दे दिया॥

तब सिंहनी बोली कि हे प्रिये! कुछ हमारे लिये भोजन लाये? सिंह बोला प्रिय! आज तो इस सियार के बच्चे को छोड़ और कोई भी जन्तु मैंने न पाया। यह बालक है इतना जान मैंने इसे नहीं मारा, सो अब इसे खाकर खुधा मिटाओ। काल प्रातःकाल पुनः कुछ न कुछ लेही आऊंगा। वह बोली हे प्रिय! आप ने इसे बालक जान कर नहीं मारा तो मैं कैसे इसे अपने पेट के लिये मारूं? सो यह मेरा तीसरा पुत्र है। इतना कह सिंहिनी उसे भी अपने स्तन के दूध से पालने लगी इस प्रकार उन तीनों बच्चों ने एक दूसरे की जात न जान कर एक ही रंग के भोजन और खेल से अपने बालकपने का समय बिताया॥

एक समय उस बन में एक जंगली हाथी घूमता हुआ आया, उसे देख वे दोनों सिंह के बच्चे क्रुद्ध होकर उस पर चले। और उसे देख सियार का पुत्र बोला अहो यह हाथी है, तुम्हारे कुल का बैरी है, इस के सामने न जाना चाहिये। इतना कह वह घर को दौड़ा। वे दोनों भी बड़े भाई के भागने से निरुत्साह हो गये। दोनों ने घर आय माता पिता के सामने अपने

॥ खरहों और हाथियों की कहानी ॥

किसी बन में चतुर्दन्त नामक एक बड़ा हाथी झुंड भर का राजा रहता था। एक समय बहुत दिनों पानी न बरसा, कि जिस्से ताल तलाव गड़हे पोखरी इत्यादि सब के सब सूख गये। तब सब हाथी उस गजराज से कहने लगे कि हे स्वामी। कई हाथी प्यास से व्याकुल हैं और कितने ही मर भी गये. सो कहीं जल का स्थान ढूंढ़ना चाहिये कि जिस में जल पीने से सब की घबराहट मिटे। तब उसने आठों दिशा में जल ढूंढ़ने के लिये दौड़ने वाले जानवरों को भेजा ॥

तब उन्हीं ने कि जो पूर्व दिशा की ओर गये थे हंस और कारण्डव आदि जल के पक्षियों से भूषित और फल के बोझ से झुके हुये बन के वृक्षों से शोभित एक चन्द्रसर नामक बड़ा भारी तालाव देखा। उसे देख प्रसन्न हो उन सबों ने लौट कर स्वामी को प्रणाम किया और कहा, महाराज। उजाड़ जंगल में एक बड़ा भारी तलाव है वहां चलिये ॥

जब ऐसे उन सबों ने कहा तो पांच रात चलते २ वे लोग तलाव पर पहुंचे। और अपनी इच्छा के अनुसार उस तलाव में न्हाकर सूर्यास्त के समय निकले। उस तलाव के किनारे खरहों के अनेकहां बिल थे, वे सब इधर उधर घूमते हुवे हाथियों से टूट गये। उस में कितने खरहे तो मर गये और कितनों के प्राण किसी किसी प्रकार बचे कितनों के पैर टूट गये, कितनों के शरीर छील छाल गये (और मांस लटकने लगा) और कितने ही लहू लोहान हो गये ॥

मता था परन्तु उसकी अत्यन्तदृढ़ मांस को फाड़ न सकता था। इतने ही में इधर उधर घूमता हुआ कोई सिंह वहीं पर आ पहुंचा ॥

सिंह को आते हुवे देख सियार दोनों हाथ जोड़ कर नम्रता से बोला कि स्वामी ! मैं आप का दास [हाथ में लाठी लिये] इस हाथी की रक्षा कर रहा हूं। सो महाराज इसे खाइये। उस को नम्र हुआ देख सिंह बोला अरे मैं दूसरे के मारे हुवे जन्तु को कभी भी नहीं खाता . सो यह तेरा हाथी मैंने तुझी को दिया यह सुन सियार आनन्द से बोला ठीक है स्वामी को अपने दासों पर ऐसाही उचित है ॥

सिंह के जाने पर कोई बाघ वहां आया, उसे देख उसने विचारा कि अरे एक दुष्ट को तो प्रणामादि से दूर किया अब इसे कैसे हटाऊं। यह तो निस्सन्देह बली है, यहां कोई पेंच खेले बिना बात नहीं बनती ॥

इतना बिचार उसके सम्मुख जाय ऊंचा कन्धा कर चौक कर बोला , मामा ! क्यों यहां मृत्यु के मुंह में आये ? इस हाथी को सिंह ने मारा है और मुझे इसका रक्षक बना आप नदी में स्नान करने गया है, उसने जाते हुये मुझे यह आज्ञा दी है कि यदि कोई बाघ आघ यहां आवे तो तू मुझे चुपके से कह दीजियो आज इस जंगल को मैं बिना बाघ का कर डालूंगा पहिले मेरे मारे हुये हाथी को एक बाघ ने खाकर जूठा कर दिया था उसी दिन से मैं बाघों पर क्रोधित रहता हूं ॥

यह सुन बाघ डर कर उस से बोला कि हे भांजे मुझे प्राण दान दो [अर्थात प्राण बचाइये] तुम उसके आने पर मेरी बात

जब वह हाथियों का झुंड निकल गया तब वे सब खरहे झट पट आपस में मिल "सलाह" करने लगे कि अहो हम सब तो मरे। यह हाथियों का झुंड तो प्रति दिन आया ही करे गा क्यों कि और कहीं जल तो हई नहीं, बस हम सबों का नाश होगा, सो इन के रोक का कोई उपाय सोचो ।

तब उन में से कई बोले चलो यह स्थान छोड़के कहीं चलें दूसरे कहने लगे वाह। यह बाप दादों का स्थान एका एकी छोड़ना उचित नहीं है। उन हाथियों को कोई भय दिखाओ जिस्में वे पुनः यहां कभी न आवेंगे। तब दूसरे सोच कर कहने लगे कि यदि ऐसा ही है तो उन को भय दिखाने का एक उपाय है जिस से वे न आवेंगे। वह भय यह है कि हम लोगों का स्वामी विजय दंत नामक खरहा चन्द्रमण्डल में रहता है। किसी दूत को गज राज के पास भेज दो, वह यह कहे कि हे गजराज। भगवान, चन्द्रमा तुमको इस तलाव पर आने से बरजते हैं क्यों कि उनके आश्रित हम लोग इस तलाव के आस पास रहते हैं। ऐसा कहने से क्या आश्चर्य है जो न आवें ॥

तब दूसरे बोले यदि ऐसा है तो आलम्बकर्ण नाम खरहा (हम लोगों के साथ) है। वह बात बनाने में बड़ा चतुर है और दूत का काम भी जानता है। उसको भेजो। तब दूसरे कहने लगे हां हां ठीक कहा हम लोगों के जीवन का कोई दूसरा उपाय नहीं है, सो लम्बकर्ण को ढूंढ़ के इस काम में लगाओ ॥

ऐसा होने पर लम्बकर्ण ने दूसरे दिन गजराज को हाथियों से घिरे हुए आते देख विचारा कि इनके साथ हमारे ऐसों का मेल नहीं पट सकता। सो ऐसे स्थान पर से इसे अपना दर्शन दं

इ क्या हैं ? तब दूसरा पुस्तक खोल कर बोला कि।

"बन्धु वही जो मरघट सेवै"

सो यह हम लोगों का बन्धु है। तब कोई तो उस के गले में लपट गया और कोई दोनों पांव धोने लगा॥

तब लों वे पंडित इधर उधर देखें तब लों कोई ऊंट देख पड़ा न सभों ने कहा यह क्या है? तब तीसरे ने पुस्तक खोल काहा कि।

"धर्महिं की गति तुरत बखानी।"

तो यह धर्म है। चौथे ने कहा कि

"मित्रहिं करै धर्मउ पदेस,,

तब उन सबों ने गदहे को ऊंट के गले में बांध दिया। (यह हाल) किसी ने धोबी से जाकर कहा। जबलों धोबी उन मूर्ख पंडितों को मारने के लिये आया तबलों वे भाग गये।

इसके अनन्तर आगे कुछ दूर जाने पर किसी नदी के पास पहुंचे। उसके जलमे एक पलास के पत्ते को आता हुआ देख एक पंडित ने कहा कि,

"आवतु है यह पात † जो सोई लगावै पार,,

इतना कह उस पत्ते पर चढ़ बैठा (गिर पड़ा) और नदी उसे बहा ले चली। तब उसे बहता हुआ देख दूसरे पण्डित ने उसकी चोटी पकड़ कहा कि। दोहा।

सर्वनास होते समय अर्ध तजैं बुध लोग।

आधे सों कारज करैं सर्वनास दुख जोग॥

इतना कह उसका सिर काट लिया।

दो मछली औ एक मेंडक की कहानी॥

किसी तलाव में शतबुद्धि औ सहस्रबुद्धि नामक दो मछलियां

कि जहां यह मार न सके। ऐसा विचार एक अति ऊंचे स्थान पर जहां किसी की पहुंच न हो चढ़कर वह उस गजराज से बोला कि अरे दुष्ट हाथी क्यों इस प्रकार, अपमान से और निडर होकर पराये तलाव पर आता है, जा लौट जा ॥

यह सुन हाथी आश्चर्य खाकर बोला कि तू कौन है? वह कहने लगा कि मैं विजयदत्त नामक चन्द्रमण्डल का रहने वाला खरहा हूं। यह भगवान चन्द्रमा ने अपना दूत मेरे पास भेजा है। तू जानता है कि ठीक २ सन्देस कहनेवाले दूत का कुछ दोष नहीं होता। राजाओं के मुख दूत ही * होते हैं। यह सुन हाथी बोला [हे खरहे] कहो, भगवान चन्द्रमा का सन्देस कहो कि जिसे सुनकर झट करें ॥

वह बोला कि भगवान चन्द्रमा ने यह कहा है कि कल तुमने झुंड के संग आते हुए बहुत से खरहों को मार डाला। तुम जानते हो कि ये हमारे आश्रित हैं इसी कारण संसार में मेरा नाम शशांक प्रसिद्ध है। सो यदि अपना जीवन चाहते हो तो फिर इस तलाव पर मत आना। बहुत अधिक बकवाद करने से क्या लाभ है यदि तुम इस काम से अपना हाथ न खींचोगे तो हम से बड़ा कष्ट पावोगे। यही उनका संदेस है ॥

यह सुन हाथियों का राजा बहुत घड़घड़ाकर सोचकर बोला कि सच मुच ही मैंने भगवान चन्द्रमा का अपराध किया है। सो अब मैं उन से विरोध न करूंगा। शीघ्र मुझे मार्ग दिखाओ जो मैं जाकर भगवान चन्द्रमा को प्रसन्न करूं। खरहा बोला कि अच्छा हम

---

* अर्थात् राजा लोग शत्रु के पास आप कहने नहीं जाते दूतों से सन्देसा कहला देते हैं ॥

पनन्तर दूसरे दिन सवेरेही उन मछली पकड़ने वालों ने घा
कर जालों से उस कुण्ड को घेर लिया। तब सभी मच्छ काकुर्वे
मेंड़क कांकड़े आदि जल जन्तु बंध गये और पकड़े गये। और उन
दोनों शतबुद्धि और सहस्र बुद्धि ने इधर ऊधर दौड़ भागकर देंरलों
पपने को बचाया तौभी जाल में फस गये और मारे भी गये ॥

पनन्तर तीसरे पहर वे मलाह प्रसन्न हो अपने घर चले। शत
बुद्धि की भारी होने से एक ने माथे पर धरा और दूसरा रस्से में
बांध सहस्रबुद्धि को घसीट ले चला।

तब तो बावली में से एक बुद्धि मेंड़क अपनी स्त्री से बोला f
देख देख प्यारी ॥

सतबुद्धी माथे धर्यो सहसबुद्धि लटकंत।
एक बुद्धि हमहीं प्रिये निरमल तोय खिलंत ॥

"गदहे और सियार की कहानी,,

किसी स्थान में मदोद्धत नामक गदहा रहता था। वह दि
को धोबी के घर बोझा ढोकर रात को अपनी इच्छानुसार घुम
करता था। एक समय उसे रात को खेत में घूमते हुये किसी सि
यार से मित्रता हो गई। वे दोनों डंड़वार ड़ांक काकड़ी के खेत
पैठ उस के फल को इच्छानुसार खा कर प्रातःकाल अपने स्था
को चले जाते थे ॥

एक समय खेत में खड़े हो कर मदोद्धत गदहे ने सियार
कहा कि हे भांजे! देखतो कैसी स्वच्छ रात है। सो मैंतो गाऊं
कहो किस राग में गाऊं। वह बोला कि मामा इस ह्या के
त्यात से क्या लाभ है ? हम लोग चोर का काम कर रहे हैं
चोरों को तो छिपही के रहना चाहिये। और तुमारा गाना भी

ग तुम अकेलेही आओ तो मैं उन्हे दिखादूं ॥ हाथी बोलाकि इस
सय भगवान चन्द्रमा कहां हैं ? उसने कहा कि इस समय वे
म्हारे मारे और कुचले खरहों के आश्वासन करने के लिये इस
लाव में आये हैं। और मुझे तुम्हारे पास भेजा है। हाथी बोल
ाही यदि एसा ही है तो मेरे स्वामी को दिखावो जो मैं उन्हें प्रणाम
ार प्रसन्न कराय कहीं दूसरे स्थान को चला जाऊं ॥

खरहा बोला अहो हमारे संग अकेलेही आओ और उनका द
ान करो। उसके पिछे आने पर खरहेने उसे रात्रि में ले जाक
ालावके किनारे खड़ाकर जलके बीच चन्द्रमा की परछांही दिखा
ौर कहा यह हम लोगों के स्वामी जलके बीच ध्यान लगाये बै
हैं। चुप चाप प्रणामकर शीघ्रही चल दो। नहीं तो समाधिभ
होने से और भी तुम्हारे ऊपर कोप करैं गे। तब हाथीने चिल्ला
कर जलमें सूंड़ डाला ॥

तब उसने पानी के हिलने से इधर उधर घूमते चन्द्रमण्डल
सहस्रों ही चन्द्रमा देखे। तब खरहा फिर के गजराज से बोल
अहो अनर्थ हुआ तुमने चन्द्र भगवान को और भी दूना क्रोधि
किया। वह बोला किस कारण चन्द्रमा भगवान मुझ पर क्रुद्ध ह
हैं। उसने कहा कि इस पानी के छूने से ॥

यह सुन गजराजने पृथ्वी पर सिर झुका प्रणाम कर भगव
चन्द्रमा से अपराध क्षमा कराया। और तब खरहे से बोला कि ि
सब प्रकार से भगवान चन्द्रमाको हमारे परप्रसन्न करना तुम्हें उ
त है। मैं पुन: कभी यहां न आऊंगा। इतना कह डर से घबरा
चलागया। खरहे भी उसी दिन से अपने २ कुटुम्ब के सहित
में अपने स्थान में रहने लगे ॥

मेरे पास बहुत घोड़े हो जायगी ।। उस की बेचने से बड़ा सोना होगा। सोने से फिर एक चौमहला घर हो जायगा ॥

तब कोई ब्राह्मण मेरे घरपर आकर अपनी अति रूपवती कन्या मुझे देगा। उसको पुत्र होगा। उसका मैं सोमशर्मा नाम रक्खूंगा जब वह घुटनों से चलने के योग्य होगा तो मैं पुस्तक ले कर घुड़-सान की छत्त पर बैठ पढूंगा। इतने में सोमशर्मा मुझे देख माता के गोद से घुटनो से चलता २ घोड़े के खुर के पास से होता हुआ मेरे समीप आवेगा। तब मैं ब्राह्मणी को क्रोध से कहूंगा कि "उठाओ उठाओ बालक को" वह घर की कामों में लगी रहने के कारण मेरी बात न सुनेगी। तब मैं उठकर उसे एक लात मारूंगा इस प्रकार उसने उस ध्यान में लग कर ऐसी लात मारी कि वह सत्तू से भरा हुआ घड़ा फूट गया)

॥ इत्यलम् ॥

इति श्री साहित्याचार्य पण्डित अम्बिकादत्तव्यास
विरचित ऋजुपाठभाषानुवादः समाप्तः ।

("तीन धूर्तों की कहानी")

किसी नगर में मित्रशर्मा नामक ब्राह्मण रहता था। वह एक सम-
माघ के महीने में पशु मांगने के लिये किसी दूसरे गांव में गया
हां जाकर उसने किसी यजमान से मांगा कि हे यजमान इस
ानेवाली अमावस्या को मैं यज्ञ करूंगा सो मुझे एक पशु दो।
व उसने उसे एक मोटा पशु कि जैसा शास्त्रों में कहा है दिया।
ह भी उसे समर्थ और इधर उधर चलता देख कांधे पर रख शीघ्र
ापने नगर की ओर चला॥

अनन्तर उसको मार्ग में तीन धूर्त साम्हने से मिले। उन सबोंने
ेस मोटे पशु को उसके कान्धे पर चढ़ा देख परस्पर कहा कि
अहो आज बड़ा पाला पड़ता है सो जैसे बने तैसे इसे ठग कर पशु
को ले शीत का बचाव करना चाहीये॥

तब उन में से एक अपना वेष "बदल" कर साम्हने आ उससे
बोला अहो यह लोक विरुद्ध हंसी का काम क्या करते हो? जो
इस अपवित्र कुत्ते को कांधे पर चढ़ाये लिये जाते हो। तब वह
ब्राह्मण क्रुद्ध हो कर बोला अरे क्या तू अन्धा है? जो इस पशु को
(बकरे को) कुत्ता बनाता है। वह बोला कि ब्राह्मण देवता क्रोध
मत कीजिये अपनी इच्छा से चले जाइये॥

अनन्तर जब लों दूसरे मार्ग से आताही था कि दूसरा धूर्त साम्हने
से आ उससे बोला कि अहो ब्राह्मण देवता! हा! बड़े खेद की बात
है यद्यपि यह कुत्ता आप का प्रिय है तो भी कांधे पर चढ़ाना उचि
त नहीं है। तब वह क्रोध से यह बोला कि क्या तू अन्धा भया है
जो बकरे को कुत्ता कहता है? उसने कहा महाराज जी। क्रोध

दयानन्दमतमूलोच्छेद (दयानन्दियों के भेद मालुम करना हो तो अवश्य देखो)
कलियुग की घी (कलियुग में घी की दुर्दशा)
सुधरने की जड़ (यथा नाम तथा गुण)
चतुरंगचातुरी (सतरंज में चतुर होना चाहते हो तो अवश्य देखो)
कथाकुसुमकलिका (कथा कुसुम का हिन्दी में अनुवाद)
गौसंकट नाटक (किसी को गौ भली होतो देखे)
तासकौतुकपचीसी (तासके खेलों की प्रवेशिका)
महातासकौतुक पचासा (बड़े बड़े इन्द्रजाल)

मत कीजिये मैंने भूलसे यह कहा आप अपनी मन मानी कीजिये ॥

जबलों वह थोड़ी दूर जाय कि तबलों तिसरा धूर्त वेष बदल साम्हने हो उससे बोला अहो यह अनुचित बात है जो कुत्ते को कांधे पर चढ़ाये लिये जाते हो। सो इसे छोड़दो जो कोई दूसरा न देख ले। तब वह बहुत सोच साच उस बकरे को कुत्ता जान भय से पृथ्वी पर पटक अपने घर की ओर भागा ॥ तब वे तीनों मिलकर उस पशु को ले चल दिये ॥

("ब्राह्मण और सांप की कहानी")

किसी नगर में हरिदत्त नामक ब्राम्हण था। उसे खेती करते सब दिन व्यर्थ ही जाते थे। एक समय वह ब्राम्हण घाम से पीड़ित हो अपने खेत में किसी वृक्ष की छाया में सो रहा। समीपही दैंबकों की मट्टी पर पड़े हुये एक भयानक सर्प को देख उसने विचारा कि यह अवश्य इस खेत का देवता है मैंने कभी इसकी पूजा न की और इसीसे मेरा खेती का काम विफल होता है। सों आज मैं इसकी पूजा करूंगा। इतना बिचार कहीं से दूध मांग परई में धर उस दैंयकों की मिट्टी के पास जा बोला कि हे खेत के पालनेवाले महाराज! मैं अब लों नही जानता था कि आप यहां रहते हैं, इसी से मैंने पूजा न की सो अब क्षमा कीजिये। इतना कह दूध का नैवेद्य लगा घर चला गया ॥

जब प्रातः काल आके देखता है तो एक मोहर परई में पड़ी है योंही रोज अकेले आकर उसे दूध देता था और एक एक मोहर लेता था ॥